पिताश्री 9/7/61

ओम् शान्ति। शिव भगवानुवाच्य सालिग्रामों प्रति। क्या कहते? मंत्र देते हैं कि मामेकम् याद करो। शरीर पर तो कोई भरोसा नहीं है। बैठे–2 काल खा जाते हैं। ऐसे थोड़े ही है छोटे बच्चे रह जाते हैं। उनको भी काल खा जाता है। इसलिए अब बाबा कहते हैं मामेकम् याद करो। कलियुगी गुरु भी कोई न कोई मंत्र तो देते ही हैं। गुरु का काम है उसी जन्म में ही सद्गति करना। ऐसे नहीं एक गुरु मर जाय तो फिर दूसरा–तीसरा करना पड़े और गुरु करते हैं बूढ़ेपन में; क्योंकि आत्मा को जाना है। फिर पुनर्जन्म लेना है। आत्मा ही संस्कार ले जाती है। तो सिद्ध होता है कि आत्मा पुनर्जन्म लेती आती है। हेविन में तो कोई जा न सके। उनको यहाँ जन्म लेना ही है। माया से सद्गति पाए न सके। सद्गति के लिए ही मनुष्य तीर्थ आदि करते हैं; क्योंकि दुर्गति में हैं, पाप करते रहते हैं। तो समझेंगे यह दुर्गति की दुनिया है। अब तुमको सद्गति मिल रही है। यह ज्ञान दुनिया में किसको मिलता ही नहीं। तुम जानते हो कि सिवाय एक परमपिता **P** के कोई सद्गति कर नहीं सकता। गाया भी जाता है पतित–पावन सीता–राम। सद्गति दाता एक ही गाया हुआ है। अब पतित से पावन बनना है। इस दुनिया में सब पतित हैं। पावन करने वाला कोई न रहा है। गुरु लोग क्या सिखलाते हैं, राइट क्या, रांग क्या है, सो तुम जानते हो। बुद्धि को चलाना है हम आगे क्या करते थे, अब क्या करना है। गीता का भगवान खुद कहते हैं ..... ज्ञान से ही देवी–देवता धर्म की स्थापना होती है। भारतवासी इन बातों को बिल्कुल नहीं जानते। बा.... भारतवासी बिल्कुल बेसमझ पत्थर बुद्धि बन पड़े हैं। गुरुओं ने पत्थर बुद्धि बना दिया है। ..... इन गुरु–गोसाई आदि को छोड़ो। उनकी मत पर न चलो। सभी की उल्टी आसुरी मत है। ..... भक्तिमार्ग के। वो भक्त माल है। सच्ची रुद्रमाला यह है, जिसको सिमरा जाता है। .....

9/7/61 2

है शास्त्रों में भक्ति का ही वर्णन है। भक्ति माल तो कोई सिमरते नहीं। सिमरते यह माला है, जिन्होंने सृष्टि का कल्याण किया है। इन्हों की ये माला बनी हुई है। यह है संगम .... बच्चों को सारी रोशनी मिली हुई है। जिनको है ही पुराना ज्ञान .....करें। शराब जब पिया जाता है तब उसकी टेस्ट का पता चलता है। तो अब बाबा राइट बात बताते हैं। कहते हैं रांग जो सुनते आये हो उसका कन्ट्रास्ट करो। फिर जो चाहे .....। इस लड़ाई के बाद फिर क्या यह कोई नहीं जानते। विनाश ज्वाला इस रुद्रज्ञान यज्ञ से प्रज्वलित हुई है। अब बाबा दैवी फूलों का झाड़ लगाय रहे हैं। एक तरफ है आसुरी सम्प्रदाय, उसमें भी नम्बरवार हैं। सब काँटे नहीं हैं। सन्यासियों को काँटा थोड़े कहेंगे। जहाँ–तहाँ नम्बरवार मर्तबे होते हैं। तुम जानते हो सन्यासियों का है हठयोग और अब राजयोग की ..... होती है। हठयोग का विनाश होगा इसलिए तुम सच्ची कमाई कर रहे हो। सच्च खंड के लिए सच्चा बाबा ही सच्ची कमाई करना सिखलाते हैं। माया फूरी(झूठी) है तब तो कहते हैं फूरी(झूठी) काया। ..... अब तुम सच की दुनिया के लिए पुरुषार्थ कर रहे हो। पुरुषार्थ वो ही करेंगे जिन्होंने कल्प पहले किया होगा। तुमने भी अब जाना है। संगमयुग है ब्राह्मणों का। तुम ..... युग भूल गये हो। सबसे धर्मा..... युग यह है। ..... उत्तम ते उत्तम तुम बन रहे हो। सत्युग में ही देवताओं का राज्य हुआ है। सन्यासी तो पीछे आने हैं। भारत में जो पूज्य देवी–देवताएँ थे वो अब पुजारी बने हैं। तुम जानते हो हम पतित ..... जनावर बुद्धि थे। अब बाबा क्या से क्या बना रहे हैं। एक सेकण्ड में दिव्य दृष्टि मिलने से कहाँ का कहाँ चले जाते हैं। वो मालिक है ना। सारी सृष्टि का स्वामी उनको कहा जाता है। आजकल तो स्वामी लोग फकीर लोग हैं। बाबा हमको क्या बनाते हैं! तो पुरुषार्थ पूरा करना है। शरीर निर्वाह अर्थ कमाई भी करना है। रचना रची है तो उनकी पालना भी करनी है ना। अब बाबा यह नई रचना रच रहे हैं। फिर ..... कितना सुखी बनते हो। सदा सुखी बनने लिए ही तुम यहाँ आए हो। यह स्कूल बहुत बड़ा भारी है। पढ़ाने वाला वो परमपिता **P.** शिव है। इस पढ़ाई से मनुष्य सो देवता बनते हैं।

बाबा कहते हैं पूरा आशिक–माशूक बनना है। एक के सिवाय दूसरा न कोई। इतना समय तुम एक को याद नहीं करते थे। जानते ही नहीं भी थे तो याद फिर कैसे करेंगे? हम थोड़े ही जानते थे शिवबाबा कौन है, क्यों आते हैं। बस, अंधश्रद्धा वश फूल–जल चढ़ाते रहते थे। अच्छा, भला अब क्यों चढ़ाते हैं? कोई बात समझ में नहीं आती। फिर कोई शिव पर बलि

भी चढ़ते हैं। इसका कारण क्या? देवताओं पर कब अक चढ़ाया? इन पर अक क्यों चढ़ाते? शिवकाशी पर मनुष्य बलि भी चढ़ते हैं। हम वहाँ गए थे। कहते थे शिव की याद में ऐसे बलि चढ़ जाए तो उनके पाप सब कट जाते हैं। फिर नए सिरे शुरू होता है। वहाँ भी कोई सब थोड़े ही बलि चढ़ते थे। अब तो गवर्नमेन्ट ने बन्द कर दिया है। फिर भी अच्छा है नौधा भक्ति से दीदार होता है, खुश तो होते हैं ना। फिर उन्हों को जन्म भी अच्छा मिलता है। पवित्र ज़रूर रहते हैं। पवित्र रहने बिगर देवियों के आगे सिर रख न सके। देवियाँ भी किस्म2 की दिखलाते हैं। हो तो सब तुम मम्मा की बच्चियाँ। पूजन तुम्हारा ही है। यह सब राज़ बाप आकर समझाते हैं। अब भक्तिमार्ग का राज़ भी समझा। बलि आदि चढ़ते हैं उनका भी राज़ समझा। जो जिस भावना से याद करते हैं। उनको फल ज़रूर देता हूँ। बाकी मेरे से मिल न सकते; क्योंकि यह तो खेल है ना। यह सौ ..... मनुष्य वहाँ ..... चाहिए। फिर सब अपने सेक्शन में जावेंगे। पहले जावेंगे देवी–देवता धर्म वाले, नम्बरवार रिपीट होगा ना।

9/7/61 3

..... से ..... हमारी (आत्मा) प्योर होती जाती है। आत्मा प्योर होने से फिर 5 तत्व भी प्योर हो जाते हैं। शरीर भी प्योर बनते हैं। देखो **K.** कितना फर्स्ट क्लास है। भल काला हो, कैसा भी हो, तो भी खैंचेगा ज़रूर। सभी उनको प्यार करेंगे। राम इतना नहीं खैंचेगा। तुम जब ..... रखते हो तो गोविंद राधे, गोविंद गाते हो। तुमको जाना ही है **K.**पुरी में। यह कंस पुरी अथवा रावण पुरी है। मनुष्य तो बिल्कुल कुछ समझते नहीं। अंधश्रद्धा से सबकुछ करते रहते हैं। इसको व्यभिचारी भक्ति कहा जाता है। यह है ज्ञान मार्ग। ज्ञान माना पढ़ाई। यहाँ कोई .... आदि की बात नहीं। यह है सच्चे बाबा द्वारा सच्ची पढ़ाई। इस विश्व विद्यालय में पढ़ाने वाला है वो शिवबाबा जो सारे विश्व का मालिक, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, ज्ञान का सागर, चैतन्य है। बीज में नॉलेज होगी ना। जैसे हद के क्रियेटर को अपनी रचना का मालूम रहता है ना। वो हो गए हद के ब्रह्मा। फिर रचना की पालना करते हैं। विनाश तो नहीं करेंगे। बाबा है बेहद का रचयिता। उनको भी अपनी रचना का ओना रहता है। हमारे बच्चे सब दुःखी हैं। यह भी जानते हैं दुःख तो आना ही है। झाड़ को जड़–जड़ीभूत बनना ही है। फिर नया शुरू होगा। यह अनादि ड्रामा है। इसमें ड्रामा के सिवाय बाबा और कोई कर्तव्य कर नहीं सकता। ऐसे कभी नहीं कहना टीचर हमारे ऊपर कृपा करो। टीचर क्या कृपा करेगा? वो तो कहेगा मैं सहज योग, सहज ज्ञान सिखलाता हूँ। अब कृपा अपन पर तुमको करनी है। अच्छी तरह पढ़ना ही अपने पर कृपा करना है। मैं आता ही हूँ पढ़(ा)ने। योग से विकर्मों को विनाश करो। जितना पढ़ेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। तुम कहेंगे हमारी बुद्धि में धारणा नहीं होती, तो टीचर क्या करे? हम कृपा कर तुमको 3 नम्बर में रखे, फिर तो सब कहें हमारे ऊपर कृपा करो। यहाँ ..... की बात नहीं। तुम्हारा काम है पढ़ाई से ..... को पढ़ना है। मास्टर तो सबको एक जैसा पढ़ाते हैं। मामेकम् याद न करेंगे तो फिर विकर्म कैसे विनाश होंगे। देह सहित, देह के सब संबंधों को भूलना है। योग बल से विकार सब भागते जावेंगे। निकालना ज़रूर है। खुद में क्रोध होगा तो ..... को कह न सके कि क्रोध को जीतो। मेरे में ही क्रोध है तो मैं सद्गुरु का निन्दक हो जाता हूँ। फिर मैं ब्राह्मण न कहलाय ....। .... अपन से बात करो। इसमें है सारा बुद्धि का खेल। हाथ–पाँव चलाने की बात नहीं। बुद्धियोग बल कहा जाता है, बुद्धि में ज्ञान है। हमारा कोई हठयोग नहीं है। बाबा कहते हैं मैं तुम बच्चों के लिए **Heaven**, स्वर्ग स्थापन करने आया हूँ। ..... सुख भोगने लिए बच्चों को तैयार कर रहा हूँ। हर एक को ..... पुरुषार्थ करना है। बेगर टू प्रिंस बनना है। बाबा से हमेशा पूछ... है इस हालत में धंधा करना चाहिए? कई कहते हैं बाबा ..... बहुत आते हैं। बाबा कहते हैं सबसे ज्यादा हमको ....ते हैं। इन्द्रियों से कोई ..... है। वो भी जानते .... आश्चर्यवत् कथन्ती, सुनन्ती, भागन्ती भी होने हैं। बाबा कहते हैं ..... बच्चे मुझे फारकती दे जाते हैं। वण्डरफुल बाबा है, वण्डरफुल ज्ञान है और वण्डरफुल वैकुंठ है। दुनिया नहीं जानती। ..... अपन जानते हैं। अब हम श्रीमत पर चल रहे हैं। कहते हैं **K.** द्वापर में आया। वहाँ फिर महाभारत युद्ध कैसे हो सके? और वहाँ भी रावण–कंस आदि थे। तो ..... हेविन स्थापन करने आते हैं। अब .... मिशनरी निकालेगी .....। भारत बड़े से बड़ा तीर्थ है। यहाँ ही शिवबाबा ..... मुक्ति–जीवनमुक्ति देते हैं। उन्हों तो शिवबाबा को ही उड़ाय दिया है। सोमनाथ का मंदिर ही खलास कर दिया है। ..... अच्छा ॐ